Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B. A. Part -1 (Hons)
Paper - I
Indian Philosophy

1.

(पुरुष)

सांख्य दर्शन एक द्वैतवादी दर्शन है, जो तत्वशास्त्रीय दृष्टिकोण से पुरुष और प्रकृति को पारमार्थिक सत्ता के रूप में स्वीकार करता है। ये दोनों एक दूसरे के विरोधी हैं। इन दोनों के आधार पर ही सम्पूर्ण विश्व की व्याख्या की जा सकती है। इन दोनों में पुरुष निष्क्रिय है और प्रकृति सक्रिय। पुरुष अनेक है और प्रकृति एक। साधारणतः भारतीय दर्शन के अन्य सम्प्रदायों में जिस सत्ता को आत्मा या जीव की संज्ञा दी जाती है वही सत्ता सांख्य दर्शन में पुरुष कहलाती है। पुरुष एक स्वप्रमाणित सत्ता है जिसके अस्तित्व को तर्कों के द्वारा स्थापित करने की आवश्यकता नहीं है।

पुरुष को सांख्य दर्शन में अनेक विशेषताओं से युक्त माना गया है। इसे निस्त्रैगुण्य, उदासीन, साक्षी, अकर्ता, द्रष्टा, मध्यस्थ, केवल, सदप्रकाश स्वरूप, शाश्वत, ज्ञाता इत्यादि कहकर पुकारा गया है।

1. साक्षी — साक्षी पुरुष चेतन है। अतः विषयों को देखने वाला द्रष्टा माना गया है।

केवल चेतन ही विषयों का द्रष्टा होता है। द्रष्टा ही साक्षी होता है। प्रकृति अचेतन है वह अपने किए हुए कार्यों को पुरुष को

कहलाती है। अतः पुरुष साक्षी होता है।

कैवल्य — सुख दुःख की आत्यन्तिक निवृत्ति ही कैवल्य मोक्ष है। पुरुष स्वभावतः निर्गुण है, अर्थात् सुख-दुःख तथा मोह से परे है। अतः उसमें कैवल्य है।

मध्यस्थ :— पुरुष के निर्गुण होने से अथवा मध्यस्थ है होना सिद्ध होता है। पुरुष न करता है और न कर्म। मध्यस्थ की दूसरी व्याख्या भी की जाती है। सुख से तृप्त होनेवाला सुखी तथा दुःख से द्वेष होनेवाला मध्यस्थ या उदासीन नहीं होता। सुख - दुःख से रहित व्यक्ति को मध्यस्थ कहा जाता है। पुरुष निर्गुण है, अतः वह मध्यस्थ है।

अकर्ता — विवेकी होने से पुरुष अपरिणामी तथा अकर्ता माना गया है। अज्ञान रूप होने के कारण ही प्रकृति में कर्तव्य का अभिधान किया गया है। ~~पुरुष में कर्तृत्व का अभिधान किया गया है।~~ प्रकृति गुणों के कारण कर्ता तथा पुरुष निर्गुण होने के कारण अकर्ता है।

इसप्रकार सांख्य के मतानुसार आत्मा स्वयंभू, नित्य, अपरिणामी है। चैतन्य स्वरूप है। सुख दुःख आदि सभी प्रकृति तथा उसके विकारों के धर्म हैं परन्तु आत्मा के धर्म नहीं हैं क्योंकि वह निर्गुण है। सांख्यकारिका के अनुसार — "तस्माच्च विपर्यासात्

सिद्ध साक्षि-त्वमस्य पुरुषस्य।
कैवल्यं, माध्यस्थ्यं, द्रष्टृत्वमकर्तृ
भावाश्च ॥"

पुरुष की सत्ता को प्रमाणित करने के लिए सांख्य कई युक्तियाँ प्रस्तुत करता है जो निम्न श्लोक से स्पष्ट है -

"संघात परार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्य-यादधिष्ठानात्।
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात कैवल्यार्थं
प्रवृत्तेश्च ॥"

इस श्लोक की व्याख्या इस प्रकार से की जा सकती है -

1. संघात् परार्थत्वात - सभी संघात पदार्थ दूसरों के लिए होते हैं। संसार के सारे पदार्थ किसी भी प्रयोजन की सिद्धि के निमित्त हैं। परन्तु संघात् को प्रयोजन का ज्ञान नहीं, प्रयोजन तो चेतन में होता है। अतः संघातों से चेतन पुरुष की सत्ता सिद्ध होती है। अव्यक्त, महत, अहंकार इत्यादि संघात होने के कारण परार्थ हैं। जैसे - शयन, आसन इत्यादि। इसी प्रकार बुद्धि आदि भी दूसरों के लिए ही हैं।

जिनके लिए हैं वही इनसे भिन्न पुरुष हैं। त्रिगुणादि विपर्ययात् :— त्रिगुण भाव का अभाव होने से जो भी संघात होगा वह त्रिगुण अविवेकी होगा। विश्व के सारे पदार्थ सत्व रजस और तमस इन गुणों से युक्त हैं। अतः विश्व के पदार्थ पुरुष का निर्देश करते हैं जो इन तीन गुणों से रहित हैं और जो इनका द्रष्टा है। 3. अधिष्ठानात् :— सभी त्रिगुणात्मक वस्तु के लिए चेतन संचालक होने से त्रिगुणात्मक सुख - दुःख मोहात्मक सभी वस्तु किसी के द्वारा अधिष्ठित या प्रेरित होते हैं। जैसे - एक यंत्र केवल इंजीनियर या एक चेतन व्यक्ति है की निगरानी में ही कार्य करता है। इसी तरह जड़ प्रकृति भी चेतन पुरुष द्वारा नियंत्रित होती है। 4. भोक्तृभावात् — भोक्ता की अपेक्षा होने से सुख - दुःख मोहात्मक सभी वस्तु भोग्य हैं। इनका अपने लिए कोई उपयोग नहीं प्रकृति अचेतन है अतः वह अपने विकारों का उपयोग करने में असमर्थ है। प्रकृति के विकारों

का उपयोग करने के लिए कोई चेतन सत्ता आवश्यक है, यही चेतन सत्ता पुरुष है।

कैवल्यार्थ प्रवृत्ति मोक्ष के लिए प्रकृति के संयोग से पुरुष के आत्यन्तिक - स्वाभाविक पृथक्त्व, प्रयोजन का नाम ही कैवल्य है। इससे भी पुरुष की सत्ता सिद्ध होती है। शान्ति व्यायाम त्रिविध दुःख की आत्यन्तिक निवृत्ति के लिए प्रयास बतलाते हैं। बुद्धि आदि में सम्भव नहीं क्योंकि ये स्वयं दुःख रूप हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि प्रकृति से भिन्न पुरुष की सत्ता है। यही पुरुष मुक्ति के लिए प्रयास करता है। अतः उपर्युक्त तर्कों के बलपर सांख्य दर्शन पुरुष की सत्ता को प्रमाणित करता है।

अद्वैत - वेदान्त से भिन्न सांख्य दर्शन पुरुष की अनेकता में विश्वास करता है क्योंकि मनुष्य भिन्न प्रकार के शारीरिक, बौद्धिक एवं नैतिक लक्षणों से युक्त पाये जाते हैं।

सांख्य दर्शन पुरुष की संख्या अनेक मानता है। अतः इसका पुरुष सम्बन्धी विचार Spiritualistic Pluralism या आध्यात्मवाद अनेकवाद के नाम से पुकारा जाता है। सभी कालक्रमी पुरुष गुणात्मक दृष्टि से एक लेकिन संख्यात्मक

दृष्टिकोण से अनेक हैं — इस प्रकार सांख्य - दर्शन पुरुष सम्बन्धी विचार को लेकर Dualititative monism तथा Numerical Pluralism को स्वीकार करता है। सभी पुरुष गुणात्मक दृष्टिकोण से एक हैं क्योंकि वे सभी के सभी चेतन हैं। चेतना को लेकर एक पुरुष दूसरे पुरुष से पृथक नहीं है। लेकिन संख्या को लेकर पुरुष अनेक हैं। सांख्य दर्शन का यह विचार अद्वैत वेदान्त के आत्मा सम्बन्धी विचार से भिन्न है। अद्वैत वेदान्त के प्रणेता शंकराचार्य ने स्वीकार किया है कि आत्मा एक है जो ब्रह्म के साथ तद्रूप है। जीव अनेक हैं जो माया की product है लेकिन आत्मा एक है — सांख्य दर्शन अनेक आध्यात्मिक सत्ताओं के रूप में पुरुष के अस्तित्व को स्वीकार करता है। इस विचार भारतीय दर्शन में जैन दर्शन के जीव सम्बन्धी विचार तथा पाश्चात्य दर्शन में लाइबनिज के चिद्बिन्दु (Monads) सम्बन्धी विचार के साथ आंशिक समता रखता है। ये सभी के सभी Dualitative monism तथा Numerical Pluralism में विश्वास करते हैं। जैन दर्शन स्वीकार करता है कि जीव अनेक हैं जो सभी के सभी चेतन हैं (चेतना लक्षणो जीवः) ठीक इसी प्रकार पाश्चात्

दर्शन में लाइबनित्ज भी स्वीकार करता है कि Monads अनेक होते हैं जो सभी के सभी आध्यात्मिक इकाई के रूप में होते हैं। सांख्य दर्शन भी आध्यात्मिक सत्ता के रूप में पुरुष को अनेक मानता है।

ईश्वर कृष्ण ने अपनी पुस्तक सांख्यकारिका के अन्तर्गत अनेक पुरुषों के अस्तित्व को स्वीकार किया है और अनेक पुरुषों के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए ~~कुछ बातों का अवलोकन करने के लिए~~ कुछ तर्कों का प्रयोग किया है। इन्होंने लिखा है—

"जनन मरण करणानां प्रतिनियमादयुगपत्प्रवृत्तेश्च।
पुरुष बहुत्वं सिद्धं त्रैगुण्य विपर्ययाच्चैव॥"

प्रतिनियमात — 1. जनन मरण करणानां अगर पुरुष एक होता तो किसी एक पुरुष के जन्म लेने से अन्य सभी पुरुषों का जन्म हो जाता और किसी एक के मरने से अन्य सभी मर जाते। लेकिन ऐसी बात नहीं है। कुछ जन्म लेते हैं और कुछ मरते हैं। न तो एक साथ सभी का जन्म होता है और न एक साथ सभी मरते हैं, इतना ही नहीं विभिन्न

पुरुषों में ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों के क्रिया कलाप में भी भिन्नता पाई जाती है। किसी एक पुरुष के अन्धा या बहरा होने से अन्य सभी पुरुष अन्धा या बहरा नहीं हो जाता है अगर एक पुरुष किसी एक पदार्थ का ज्ञान प्राप्त करता है तो अन्य सभी पुरुष भी उसका ज्ञान नहीं प्राप्त कर लेता है। इन सारी बातों से यह प्रमाणित हो जाता है कि पुरुष अनेक है।

2. अयुगपत्प्रवृत्तेः - अगर पुरुष एक होता तो किसी एक पुरुष के द्वारा सम्पादित कर्म अन्य सभी पुरुषों के द्वारा सम्पादित होता लेकिन ऐसी बात नहीं है किसी एक पुरुष को किसी कार्य में प्राप्त होने से अन्य सभी उसमें प्रवृत्त नहीं हो जाते अगर एक पुरुष सो जाता है तो सभी पुरुष सो नहीं जाता। किसी एक के जागने से सभी पुरुष जाग नहीं जाते। अगर एक पुरुष बन्धन ग्रस्त होता है तो सभी बन्धन - ग्रस्त नहीं हो जाते और न किसी एक पुरुष के मुक्त होने से अन्य सभी मुक्त हो जाता है इन सारी बातों से भी यह प्रमाणित होता है कि पुरुष एक नहीं बल्कि अनेक है।

3. त्रैगुण्य विपर्ययात - यद्यपि मुक्त पुरुष त्रिगुणातीत या निःत्रैगुण्य होने के कारण सभी के सभी एकदूसरे के समान हैं उनमें सिर्फ संख्यात्मक

भेद होता है लेकिन यह पुरुष एक दूसरे से पृथक इसलिए है कि इनमें से कुछ में सत्वगुण की प्रधानता होती है, कुछ में तमोगुण की और कुछ में रजोगुण की। विभिन्न पुरुषों में विभिन्न गुणों की प्रधानता इस बात का प्रमाण है कि पुरुष एक नहीं बल्कि अनेक है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि ईश्वर कृष्ण ने कारिका नं 18 के द्वारा अनेक पुरुषों के अस्तित्व को प्रमाणित किया है। सांख्य-सूत्र में यह स्पष्ट किया गया है कि जब श्रुति ग्रन्थों में एक पुरुष या आत्मा की बात की जाती है तो इसका तात्पर्य वर्ग या जाति से होता है। Individuals से नहीं।

आलोचकों ने सांख्य दर्शन के अनेक पुरुष-सम्बन्धी विचार की तीव्र आलोचना की है। वस्तुतः पारमार्थिक सत्ता के रूप में पुरुष अनेक नहीं हो सकता। सांख्य दर्शन भी Transcendental spirit के रूप में पुरुष को एक ही मानता है, लेकिन इस बात की व्याख्या करने में असमर्थ हो जाता है कि Transcendatal Reality के रूप में एक पुरुष अनेक Empirical egos का रूप धारण कैसे कर लेता है?

वस्तुतः सांख्य दर्शन के अन्तर्गत अनेक पुरुषों के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए जितने भी तर्कों का प्रयोग किया गया है वे सभी तर्क Empirical egos

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

के अस्तित्व के लिए है जन्म और मृत्यु के आधार पर पुरुष की अनेकता प्रमाणित नहीं की जा सकती है क्योंकि अगर पुरुष परमार्थ है तो फिर उसका जन्म और मृत्यु कैसे हो सकती है। जन्म और मृत्यु देश और काल में होता है लेकिन पुरुष देश और काल से परे है। गुणों की प्रधानता के आधार पर भी पुरुष की अनेकता प्रमाणित नहीं की जा सकती है। एक ओर पुरुष को निस्त्रैगुण्य मानना और दूसरी ओर यह कहना की पुरुषों में गुणों की प्रधानता को लेकर अन्तर पाया जाता है आत्म विरोधी है। अद्वैत वेदान्त के प्रणेता शंकराचार्य का कहना है कि सांख्य-दर्शन पुरुष के सम्बन्ध में गुणात्मक एकवाद और संख्यात्मक अनेकवाद को स्वीकार करता है लेकिन गुणात्मक अनेकवाद के अभाव में संख्यात्मक अनेकवाद अर्थहीन है।

इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यद्यपि सांख्य दर्शन अनेक पुरुषों के अस्तित्व को स्वीकार करता है और तर्कों के द्वारा अपने विचार को प्रमाणित करने का प्रयास करता है लेकिन इस प्रयत्न में इसे पूर्ण सफलता नहीं मिल पाती है।